उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर

Institute of Advanced Studies in Education

Bilaspur (C.G.)

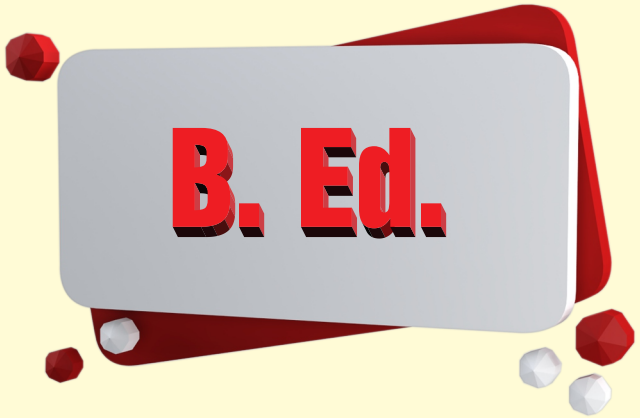

Dr. Vidya Bhushan Sharma
M.A. Eng., Phil., Psy., M.B.A, M.Lib,
M.Phil., M.Ed., PhD. Education
Post Graduate Certificate in Research Methodology

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)

Lev Vygotsky's
Social Constructivism

Dr. Vidya Bhushan Sharma
M.A. Eng., Phil., Psy., M.B.A, M.Lib,
M.Phil., M.Ed., PhD. Education
Post Graduate Certificate in Research Methodology

Lev Vygotsky's Social Constructivism

लेव सेमेनोविच वायगोत्स्की (1896–1934) एक प्रसिद्ध सोवियत मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने विकासात्मक मनोविज्ञान और शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वायगोत्स्की का जन्म 17 नवंबर, 1896 को रूस के ऑर्शा (जो अब बेलारूस में है) में हुआ था। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई प्रमुख विचार प्रस्तुत किए, जो आज भी शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रभावी हैं। उनकी सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा सामाजिक निर्माणवाद (Social Constructivism) और ज़ोन ऑफ़ प्रोक्षिमल डेवलपमेंट (ZPD) है, जो यह बताती है कि बच्चों का संज्ञानात्मक विकास उनके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के साथ गहराई से जुड़ा होता है।

शैक्षिक पृष्ठभूमि (Educational Background) वायगोत्स्की ने 1913 में मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी में कानून की पढ़ाई शुरू की। हालांकि, उनका झुकाव साहित्य, दर्शन, और मनोविज्ञान की ओर अधिक था। अपनी पढ़ाई के दौरान, उन्होंने दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, और समाजशास्त्र में भी गहन रुचि ली। वायगोत्स्की ने अपने शोध कार्य में समाज और संस्कृति के संदर्भ में बच्चों के मानसिक विकास की प्रक्रियाओं को समझने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया।

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)

करियर और योगदान (Career and Contributions) वायगोत्स्की ने अपने संक्षिप्त जीवनकाल में कई महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत किए, जो आज भी शैक्षिक मनोविज्ञान में मौलिक माने जाते हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध अवधारणा ज़ोन ऑफ़ प्रोक्षिमल डेवलपमेंट (Zone of Proximal Development - ZPD) है, जिसमें उन्होंने बताया कि बच्चे का सीखने और विकास का सबसे प्रभावी तरीका यह है कि वह कार्य करे जो वह अकेले नहीं कर सकता, लेकिन मार्गदर्शन या सहायता के साथ पूरा कर सकता है। यह सिद्धांत शिक्षा और शिक्षण में शिक्षक और छात्र के बीच संवाद और सहयोग के महत्व को रेखांकित करता है।

प्रमुख सिद्धांत (Major Theories)

1. सामाजिक निर्माणवाद (Social Constructivism): वायगोत्स्की का यह सिद्धांत बताता है कि संज्ञानात्मक विकास एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो मुख्य रूप से संवाद, सहयोग, और सांस्कृतिक उपकरणों के माध्यम से होता है। उन्होंने तर्क दिया कि बच्चे अपने सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से सीखते हैं, और यह कि उनकी सोचने और समझने की प्रक्रियाएँ इन्हीं संदर्भों से प्रभावित होती हैं।

2. ज़ोन ऑफ़ प्रोक्षिमल डेवलपमेंट (ZPD): वायगोत्स्की ने यह अवधारणा प्रस्तुत की कि बच्चे के पास दो स्तर होते हैं: (1) जो वह अकेले कर सकता है और (2) जो वह सक्षम मार्गदर्शन के साथ कर सकता है। इस अंतर को ZPD कहा जाता है, और यह शिक्षा में बच्चों की क्षमता को समझने और उन्हें सहायक शिक्षण प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण है।

3. भाषा और संज्ञानात्मक विकास (Language and Cognitive Development): वायगोत्स्की ने भाषा को संज्ञानात्मक विकास का मुख्य उपकरण माना। उन्होंने बताया कि भाषा न केवल संचार का साधन है, बल्कि यह सोचने और समझने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। भाषा के माध्यम से बच्चे जटिल अवधारणाओं और विचारों को समझने और उनका उपयोग करने में सक्षम होते हैं।

आलोचना और प्रभाव (Criticism and Impact) वायगोत्स्की के कार्यों की शुरुआत में बहुत सराहना नहीं हुई, खासकर सोवियत संघ के शासन के दौरान। लेकिन उनकी मृत्यु के बाद, उनके सिद्धांतों को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया और उन्हें आधुनिक शैक्षिक और विकासात्मक मनोविज्ञान में एक प्रमुख स्थान दिया गया। उनके विचारों ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी, खासकर शिक्षण में सहयोग, संवाद, और सांस्कृतिक उपकरणों के महत्व को लेकर।

सामाजिक निर्माणवाद का मूल सिद्धांत
(Core Principles of Social Constructivism)

परिचय: सामाजिक निर्माणवाद वायगोत्स्की का प्रमुख सिद्धांत है, जो इस विचार पर आधारित है कि किसी व्यक्ति का संज्ञानात्मक विकास (cognitive development) व्यक्तिगत प्रक्रियाओं से अधिक सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर होता है। वायगोत्स्की ने पियाजे के सिद्धांतों का खंडन करते हुए यह तर्क दिया कि बच्चों का मानसिक विकास केवल उनके व्यक्तिगत अनुभवों पर निर्भर नहीं होता, बल्कि यह उनके सामाजिक परिवेश से गहराई से प्रभावित होता है। उनके अनुसार, सीखने और समझने की प्रक्रिया किसी व्यक्ति और उसके समाज के बीच की बातचीत से उत्पन्न होती है।

1.1 सामाजिक निर्माणवाद की परिभाषा (Definition of Social Constructivism) : वायगोत्स्की का सामाजिक निर्माणवाद इस सिद्धांत को प्रस्तुत करता है कि संज्ञानात्मक विकास सामाजिक संपर्क और सांस्कृतिक संदर्भों के माध्यम से होता है। यह सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि बच्चे की मानसिक क्षमताएँ केवल उसकी व्यक्तिगत समझ और अनुभवों का परिणाम नहीं हैं, बल्कि समाज में दूसरों के साथ उसकी बातचीत का परिणाम हैं। इसका अर्थ है कि बच्चे के विकास के लिए उसके आसपास के लोग, शिक्षक, परिवार के सदस्य और समाज महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उदाहरण: जब एक बच्चा किसी खेल के दौरान अपने दोस्तों के साथ संवाद करता है, तो वह केवल खेल के नियम नहीं सीख रहा होता है, बल्कि उसे भाषा, सामाजिक व्यवहार, और समस्याओं को हल करने की रणनीतियाँ भी सीखने को मिलती हैं। यह संवाद और सहयोग बच्चे की संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

1.2 सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभावों की भूमिका (Role of Cultural and Social Influences) : वायगोत्स्की के अनुसार, बच्चे का मानसिक विकास उसके सामाजिक वातावरण से गहराई से प्रभावित होता है। प्रत्येक समाज में अपनी विशिष्ट संस्कृति, परंपराएँ, भाषा, और संवाद होते हैं, जो बच्चे के मानसिक विकास को दिशा प्रदान करते हैं। एक बच्चे का संज्ञानात्मक विकास तब होता है जब वह उन सांस्कृतिक उपकरणों और सामाजिक प्रतीकों को समझता है और उनका उपयोग करता है जो उसके समाज में महत्वपूर्ण होते हैं।

उदाहरण: किसी समाज में, बच्चे को गणित सिखाते समय उस समाज में प्रचलित गणितीय प्रतीकों और तरीकों का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, धार्मिक या पारंपरिक अनुष्ठानों में भाग लेने से बच्चा सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात करता है और उन्हें समझने लगता है।

1.3 सामाजिक अंतःक्रियाएँ और विकास (Social Interactions and Development) : वायगोत्स्की ने कहा कि बच्चा अपनी सीखने और समझने की प्रक्रिया में दूसरों के साथ संवाद करता है। यह संवाद उसकी संज्ञानात्मक क्षमताओं को विस्तार देता है। सामाजिक अंतःक्रिया बच्चों को नए विचारों, दृष्टिकोणों और समस्याओं को हल करने की तकनीकों से परिचित कराती है। यह सीखने की प्रक्रिया दूसरों से मिलकर, उनकी मदद से, और उनके साथ बातचीत के दौरान होती है।

मुख्य विचार : सामाजिक अंतःक्रियाएँ बच्चे की सीखने की प्रक्रिया का केंद्र हैं।बच्चे और समाज के बीच यह बातचीत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि बच्चे को दूसरों के विचार और दृष्टिकोण समझने में मदद मिलती है।वयस्क, शिक्षक, या अधिक सक्षम साथी बच्चे के विकास के प्रमुख स्रोत होते हैं। वे बच्चे को उन क्षेत्रों में मदद करते हैं जिन्हें वह अकेले समझ नहीं सकता।

1.4 आंतरिक और बाहरी कारक (Internal and External Factors): वायगोत्स्की के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास के दो मुख्य कारक होते हैं:

1. आंतरिक कारक: बच्चे की मानसिक क्षमता, उसकी जन्मजात योग्यताएँ, और उसकी व्यक्तिगत क्षमता।

2. बाहरी कारक: सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ, भाषा, और समाज में उपस्थित सांस्कृतिक उपकरण जो बच्चे को अपने विकास की प्रक्रिया में मदद करते हैं।यह दो कारक आपस में जुड़े होते हैं और बच्चे की समझ और सोचने के ढंग को आकार देते हैं। बाहरी कारक (जैसे भाषा और सांस्कृतिक उपकरण) आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं के विकास में योगदान देते हैं।

1.5 सामाजिक निर्माणवाद और सीखने की प्रक्रिया (Social Constructivism and the Learning Process): वायगोत्स्की का मानना था कि बच्चे केवल अपने अनुभवों से ही नहीं सीखते, बल्कि वे दूसरों के साथ बातचीत और सामाजिक संपर्क से भी सीखते हैं। यह सीखने की प्रक्रिया तीन मुख्य चरणों में होती है:

अन्य के साथ सहभागिता: बच्चा पहले वयस्कों और साथियों के साथ बातचीत के दौरान कुछ नया सीखता है।

सांस्कृतिक उपकरणों का उपयोग: इस बातचीत के दौरान वह सामाजिक और सांस्कृतिक उपकरणों का उपयोग करता है, जैसे भाषा, प्रतीक, और तकनीकें।

आत्म-समायोजन (Internalization): अंत में, बच्चा सीखी गई जानकारी को अपने अंदर समायोजित कर लेता है और उसे अपनी सोच और व्यवहार में लागू करने लगता है।

1.6 सामाजिक निर्माणवाद का महत्व (Importance of Social Constructivism) :

वायगोत्स्की के सामाजिक निर्माणवाद ने शिक्षा और विकास के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण बदलाव लाए। इसके तहत यह समझा गया कि बच्चों की शिक्षा को केवल व्यक्तिगत प्रयास के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि उसे सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में देखा जाना चाहिए। इससे यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक, माता-पिता और सहकर्मी बच्चों के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिक्षा में इसका महत्व: शिक्षक अब एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं जो बच्चों को उनकी क्षमता को पूरा करने के लिए आवश्यक सामाजिक और सांस्कृतिक संसाधनों का उपयोग करने में मदद करते हैं। सहकर्मी के साथ काम करना, समूह कार्य, और सहयोगी शिक्षण के तरीके अपनाए जाने लगे हैं, जहाँ बच्चे आपस में सीखते हैं।

लेव वायगोत्स्की का सामाजिक निर्माणवाद (Lev Vygotsky's Social Constructivism)

1. सामाजिक निर्माणवाद (Social Constructivism) वायगोत्स्की के सामाजिक निर्माणवाद का सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि बच्चों का संज्ञानात्मक विकास (mental development) उनके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में होता है। बच्चे का मानसिक विकास दूसरों के साथ बातचीत, संवाद और सहयोग के माध्यम से होता है। इसके अनुसार, बच्चे अकेले नहीं सीखते, बल्कि वे समाज में शामिल अन्य लोगों के साथ संवाद और सहयोग करके अपने ज्ञान और कौशल का विकास करते हैं।

मुख्य बिंदु:

1. सामाजिक संपर्क का महत्व (Importance of Social Interaction): वायगोत्स्की का मानना था कि बच्चे का सीखने और विकास का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम समाज में उसके साथियों और बड़ों के साथ बातचीत है। इस बातचीत के माध्यम से बच्चे न केवल नई जानकारी प्राप्त करते हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में उसे समझते भी हैं।

उदाहरण: जब एक बच्चा किसी खेल के दौरान अन्य बच्चों के साथ बातचीत करता है, तो वह न केवल खेल के नियम सीखता है, बल्कि भाषा, सामाजिक व्यवहार और संवाद कौशल भी विकसित करता है।

2. संस्कृति और भाषा (Culture and Language): संस्कृति और भाषा बच्चों के मानसिक विकास के लिए प्रमुख उपकरण हैं। वायगोत्स्की के अनुसार, बच्चे समाज के सांस्कृतिक उपकरणों (जैसे भाषा, प्रतीक) के माध्यम से नई जानकारी सीखते हैं। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि यह सोचने और समझने का उपकरण भी है।

उदाहरण: जब एक बच्चा अपने माता–पिता या शिक्षक से बातचीत करता है और नई बातें सीखता है, तो वह भाषा के माध्यम से न केवल शब्दों का अर्थ समझता है, बल्कि उन शब्दों के पीछे के विचारों और अवधारणाओं को भी आत्मसात करता है।

3. सहयोगी शिक्षा (Collaborative Learning): वायगोत्स्की ने जोर दिया कि बच्चों का मानसिक विकास दूसरों के साथ मिलकर काम करने के माध्यम से अधिक प्रभावी होता है। बच्चे एक–दूसरे से सीखते हैं और समूह में विचारों का आदान–प्रदान करते हुए नई जानकारी को समझते हैं।

उदाहरण: स्कूल में समूह कार्य करते समय बच्चे एक–दूसरे की मदद से समस्याओं का समाधान करते हैं। यह सहकर्मी के साथ संवाद और सहयोग से सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाता है।

2. ज़ोन ऑफ़ प्रोक्षिमल डेवलपमेंट (Zone of Proximal Development-ZPD) ज़ोन ऑफ़ प्रोक्षिमल डेवलपमेंट (ZPD) वायगोत्स्की का एक प्रमुख सिद्धांत है, जो यह बताता है कि बच्चे की सीखने की क्षमता का सबसे अच्छा उपयोग तब होता है जब वह उस क्षेत्र में काम कर रहा होता है जिसे वह अकेले नहीं कर सकता, लेकिन सक्षम मार्गदर्शन की मदद से कर सकता है। ZPD उस अंतर को दर्शाता है जहाँ बच्चा कठिन कार्यों को एक सक्षम व्यक्ति (जैसे शिक्षक, माता–पिता या सहकर्मी) की सहायता से पूरा कर सकता है।

मुख्य बिंदु:

1. वर्तमान विकास स्तर (-ctual Development Level**):** यह वह स्तर है जहाँ बच्चा बिना किसी सहायता के कार्य कर सकता है। यह उसकी वर्तमान क्षमता और ज्ञान पर आधारित होता है।

2. संभावित विकास स्तर (Potential Development Level): यह वह स्तर है जहाँ बच्चा एक सक्षम व्यक्ति की मदद से उन कार्यों को कर सकता है, जिन्हें वह अकेले नहीं कर सकता।

उदाहरण: यदि एक बच्चा खुद से केवल छोटे वाक्य बना सकता है, लेकिन शिक्षक की मदद से वह जटिल वाक्य बनाना सीख सकता है, तो यह उसका नझऊहोगा। धीरे–धीरे, शिक्षक की मदद से वह इन जटिल वाक्यों को बनाना खुद से भी कर सकेगा।

3. मार्गदर्शन का महत्व (Importance of Guidance): नझऊके अनुसार, बच्चे को उस स्तर तक पहुंचने के लिए सक्षम मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जहाँ वह अपने आप कार्य करने में सक्षम हो सके।

उदाहरण: जब एक शिक्षक गणित के कठिन प्रश्नों को हल करने के लिए रणनीति बताता है, तो बच्चा मार्गदर्शन की मदद से उन प्रश्नों को हल करना सीखता है। यह नझऊमें बच्चे की क्षमता को बढ़ाने का एक उदाहरण है।

3. विकास में उपकरण और प्रतीक (Tools and Symbols in Development**)** वायगोत्स्की का मानना था कि बच्चे के संज्ञानात्मक विकास में सांस्कृतिक उपकरण (जैसे भाषा, प्रतीक) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये उपकरण बच्चों को समाज में संवाद और समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं। बच्चे समाज में शामिल विभिन्न उपकरणों और प्रतीकों के माध्यम से जटिल अवधारणाओं को समझते हैं।

मुख्य बिंदु:

1. सांस्कृतिक उपकरण (Cultural Tools**):** वायगोत्स्की के अनुसार, बच्चे का मानसिक विकास सांस्कृतिक उपकरणों के उपयोग से होता है। इनमें भाषा, प्रतीक, और अन्य सांस्कृतिक व्यवहार शामिल हैं। बच्चे इन उपकरणों के माध्यम से समाज की सांस्कृतिक धरोहर को आत्मसात करते हैं।

उदाहरण: भाषा एक प्रमुख सांस्कृतिक उपकरण है। जब बच्चे भाषा सीखते हैं, तो वे केवल शब्दों का अर्थ नहीं सीखते, बल्कि उन शब्दों से जुड़े विचारों, दृष्टिकोणों और सांस्कृतिक मान्यताओं को भी आत्मसात करते हैं।

2. प्रतीकात्मक उपकरण (Symbolic Tools): प्रतीक जैसे गणितीय संकेत, धार्मिक प्रतीक, और चित्रकला बच्चे के मानसिक विकास में मददगार होते हैं। यह उपकरण बच्चे को समाज के साथ संवाद करने और समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं।

उदाहरण: जब बच्चा गणित के प्रतीकों (+, −, ÷, ×) का उपयोग करके समस्याओं को हल करता है, तो वह न केवल गणित सीखता है, बल्कि उन प्रतीकों के अर्थ और उपयोग को भी समझता है।

4. स्कैफ़ोल्डिंग (Scaffolding) स्कैफ़ोल्डिंग वायगोत्स्की का एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो यह बताता है कि बच्चे को किसी कार्य को समझने और करने में सहायता की आवश्यकता होती है। यह सहायता (मार्गदर्शन) शुरुआत में अधिक होती है और जैसे–जैसे बच्चा उस कार्य को समझने लगता है, यह सहायता धीरे–धीरे कम हो जाती है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य यह है कि अंततः बच्चा उस कार्य को बिना किसी सहायता के करने में सक्षम हो जाए।

मुख्य बिंदु:

1. प्रारंभिक सहायता (Initial Support): स्कैफ़ोल्डिंग की शुरुआत में शिक्षक या सक्षम व्यक्ति बच्चे को आवश्यक सहायता प्रदान करता है, ताकि बच्चा जटिल कार्यों को समझ सके।

उदाहरण: जब शिक्षक एक बच्चे को किसी जटिल समस्या को हल करने की प्रक्रिया सिखाता है, तो वह उसे प्रारंभिक चरण में अधिक मार्गदर्शन देता है, जिससे बच्चा समस्या को समझ सके।

2. सहायता में कमी (Gradual Reduction of Support): जैसे-जैसे बच्चा कार्य को समझने लगता है, सहायता कम कर दी जाती है। इससे बच्चा धीरे-धीरे स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता विकसित करता है।

उदाहरण: शिक्षक बच्चे को शुरू में गणितीय समस्याओं को हल करने में पूरी मदद करता है, लेकिन बाद में उसे खुद से हल करने का मौका देता है, ताकि वह स्वतंत्र रूप से सोचने और हल करने में सक्षम हो सके।

3. स्वतंत्र कार्य (Independent Work): अंततः, बच्चे को पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए तैयार किया जाता है। इस प्रक्रिया में, स्कैफ़ोल्डिंग ने बच्चे की क्षमता को बढ़ाने में मदद की होती है।

उदाहरण: एक बार जब बच्चा गणितीय समस्याओं को हल करने में सक्षम हो जाता है, तो वह बिना किसी सहायता के स्वतंत्र रूप से समस्याओं का समाधान कर सकता है।

5. शिक्षण में निहितार्थ (Implications for Teaching) वायगोत्स्की के सिद्धांतों का शिक्षण में महत्वपूर्ण प्रभाव है। उन्होंने जोर दिया कि शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया संवादात्मक, सहयोगी और सांस्कृतिक संदर्भों में होनी चाहिए। वायगोत्स्की के अनुसार, बच्चों की मानसिक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए शिक्षकों को नझऊके भीतर बच्चों को मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए, और धीरे–धीरे उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए तैयार करना चाहिए।

मुख्य बिंदु:

1. शिक्षक की भूमिका (Role of the Teacher): शिक्षक को केवल जानकारी प्रदान करने वाला नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे बच्चों को मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान करना चाहिए, ताकि वे अपनी नझऊके भीतर नए कौशल सीख सकें।

2. सहयोगी शिक्षा (Collaborative Learning): शिक्षक को बच्चों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि वे एक–दूसरे से सीख सकें और समूह में समस्याओं का समाधान कर सकें।

3. स्कैफ़ोल्डिंग का उपयोग (Use of Scaffolding): शिक्षकों को बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में प्रारंभिक सहायता प्रदान करनी चाहिए, और जैसे–जैसे बच्चा सीखता है, यह सहायता धीरे–धीरे कम कर दी जानी चाहिए

वायगोत्स्की के सिद्धांतों का शिक्षण पर प्रभाव
(Implications of Vygotsky's Theories on Teaching)

लेव वायगोत्स्की का सामाजिक निर्माणवाद और ज़ोन ऑफ़ प्रोक्षिमल डेवलपमेंट (ZPD) का सिद्धांत शिक्षण पद्धतियों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। वायगोत्स्की ने यह तर्क दिया कि शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया व्यक्तिगत रूप से नहीं होती, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में होती है। इसके अलावा, शिक्षण में सहकर्मियों और शिक्षक के सहयोग का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। उनके सिद्धांतों के आधार पर, शिक्षण में निम्नलिखित प्रभाव और निहितार्थ सामने आते हैं:

1. ज़ोन ऑफ़ प्रोक्षिमल डेवलपमेंट (ZPD) के उपयोग की आवश्यकतानझऊ वायगोत्स्की का एक प्रमुख सिद्धांत है, जिसके अनुसार बच्चों के सीखने के दो स्तर होते हैं:

1. वे कार्य जो बच्चा अपने दम पर कर सकता है।

2. वे कार्य जो बच्चा सक्षम मार्गदर्शन की मदद से कर सकता है।

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)

ZPD का शिक्षण में महत्वपूर्ण निहितार्थ यह है कि शिक्षक को बच्चों को उनके वर्तमान विकास स्तर से आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए। इसका मतलब है कि शिक्षक को यह पहचानने की आवश्यकता है कि बच्चा किस स्तर पर है और उसे उस बिंदु तक पहुँचाने के लिए किस प्रकार के सहयोग और सहायता की जरूरत है।

निहितार्थ:

शिक्षक को बच्चों की वर्तमान क्षमताओं और उनके संभावित विकास को समझना चाहिए। शिक्षण को उस स्तर पर करना चाहिए जहाँ बच्चा जटिल कार्यों को मार्गदर्शन के साथ पूरा कर सके। बच्चों को उनकी ZPD के भीतर सहायता प्रदान करनी चाहिए ताकि वे अपनी क्षमता को विकसित कर सकें।

2. स्कैफ़ोल्डिंग (Scaffolding) की अवधारणा

स्कैफ़ोल्डिंग वायगोत्स्की के नझऊसे संबंधित है, जो यह बताता है कि शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक की होती है। स्कैफ़ोल्डिंग में शिक्षक या अधिक सक्षम व्यक्ति बच्चे को प्रारंभिक सहायता प्रदान करता है, ताकि वह जटिल कार्यों को समझ सके। जैसे–जैसे बच्चा समझने लगता है, शिक्षक की सहायता धीरे–धीरे कम होती जाती है, और बच्चा स्वतंत्र रूप से कार्य करने में सक्षम हो जाता है।

निहितार्थ : शिक्षकों को बच्चों को शुरुआती स्तर पर अधिक सहायता प्रदान करनी चाहिए और धीरे–धीरे सहायता को कम करना चाहिए, ताकि बच्चे स्वतंत्र रूप से सोच और काम कर सकें। शिक्षक बच्चों के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं, लेकिन उन्हें आत्म–निर्भर बनाने के लिए कार्य के दौरान स्वतंत्रता भी देते हैं।

3. सामाजिक संवाद का महत्व (Importance of Social Interaction) वायगोत्स्की के अनुसार, सीखने की प्रक्रिया सामाजिक संवाद पर आधारित होती है। बच्चे समाज के अन्य लोगों के साथ संवाद और सहयोग करके सीखते हैं। शिक्षक की भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि कक्षा में बच्चों को एक–दूसरे के साथ संवाद करने और सहयोग करने के पर्याप्त अवसर मिलें।

निहितार्थ: समूह कार्य और सहयोगी अधिगम (Collaborative Learning) को बढ़ावा देना चाहिए ताकि बच्चे एक–दूसरे से सीख सकें।शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कक्षा का वातावरण संवादात्मक हो, जहाँ बच्चे खुलकर विचारों का आदान–प्रदान कर सकें। सहकर्मी सीखने (Peer Learning) को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे बच्चे आपस में संवाद करके समस्याओं का समाधान कर सकें।

4. सांस्कृतिक संदर्भों का शिक्षण में उपयोग (Utilization of Cultural Contexts in Teaching**)** वायगोत्स्की के अनुसार, बच्चों का विकास उनके सांस्कृतिक संदर्भों से गहराई से जुड़ा होता है। शिक्षक को बच्चों के समाज और संस्कृति को समझते हुए उन्हें उसी के आधार पर शिक्षण सामग्री और अनुभव प्रदान करने चाहिए। भाषा, सांस्कृतिक प्रतीक, और सामाजिक व्यवहार बच्चों की समझ को आकार देते हैं, इसलिए इनका शिक्षण में समावेश आवश्यक है।

निहितार्थ: शिक्षकों को स्थानीय संस्कृति, भाषा, और परंपराओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण की योजना बनानी चाहिए। सांस्कृतिक उपकरणों (जैसे भाषा, प्रतीक, और सामाजिक संदर्भ) का इस्तेमाल करके बच्चों की शिक्षा को उनके जीवन से जोड़ना चाहिए।

5. शिक्षक की भूमिका: मार्गदर्शक और सहायक (Teacher's Role: Guide and Facilitator**)** वायगोत्स्की के सिद्धांतों के अनुसार, शिक्षक का काम केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि बच्चों को ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में सहायता करना है। शिक्षक एक मार्गदर्शक की तरह होते हैं, जो बच्चों को उनके अधिगम की प्रक्रिया में सहयोग करते हैं और उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने और समस्याओं को हल करने के लिए सक्षम बनाते हैं।

निहितार्थ: शिक्षक को केवल निर्देश देने वाले के रूप में नहीं, बल्कि एक सहायक और मार्गदर्शक के रूप में काम करना चाहिए।शिक्षकों को बच्चों के विचारों और दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास करना चाहिए और उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

6. व्यावहारिक अनुभव और समस्याओं का समाधान (Learning Through Problem-Solving and Practical Experience**)** वायगोत्स्की के सिद्धांत बताते हैं कि बच्चों को वास्तविक जीवन की समस्याओं से निपटने के लिए व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना महत्वपूर्ण है। बच्चों का मानसिक विकास तब होता है जब वे वास्तविक जीवन की समस्याओं से निपटते हैं और उन्हें हल करने के लिए नए कौशल और दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

निहितार्थ: शिक्षण को व्यावहारिक बनाना चाहिए, जहाँ बच्चे वास्तविक जीवन की समस्याओं पर काम करें।समस्या–समाधान आधारित अधिगम (Problem-Based Learning) को कक्षा में लागू करना चाहिए।बच्चों को अपनी खुद की समस्याओं का समाधान खोजने के लिए स्वतंत्रता और सहयोग प्रदान करना चाहिए।

7. भाषा और संवाद का शिक्षण में महत्व (The Role of Language and Communication in Teaching**)** वायगोत्स्की ने भाषा को संज्ञानात्मक विकास का एक महत्वपूर्ण उपकरण माना। भाषा के माध्यम से बच्चे सोचने, समझने, और संवाद करने की क्षमता विकसित करते हैं। शिक्षण में भाषा का सही उपयोग बच्चों के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

निहितार्थ: शिक्षकों को बच्चों की भाषा कौशल को बढ़ाने के लिए संवाद आधारित शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करना चाहिए।भाषा को सीखने और समझने के लिए एक प्रमुख उपकरण के रूप में उपयोग करना चाहिए।बच्चों को उनके सोचने और समझने की क्षमता विकसित करने के लिए आंतरिक संवाद (inner speech) पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

निष्कर्ष : वायगोत्स्की के सामाजिक निर्माणवाद और नझऊके सिद्धांतों का शिक्षण पर गहरा प्रभाव है। इन सिद्धांतों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं है, बल्कि यह बच्चों को मार्गदर्शन, सहयोग, और संवाद के माध्यम से संज्ञानात्मक विकास में सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है। शिक्षक को बच्चों की क्षमता को समझते हुए उन्हें उचित समर्थन और स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए, ताकि वे जटिल समस्याओं को हल करने और अपने विकास में सुधार करने मेंसक्षम हो सकें।

व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत का विकास (Developing a Personal Theory of Learning**)** व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत वह दृष्टिकोण और मान्यताओं का समूह है, जो यह निर्धारित करता है कि कोई व्यक्ति किस प्रकार से सीखता है, उसकी सीखने की प्रक्रिया क्या है, और किस प्रकार की शिक्षण विधियाँ उसके लिए अधिक प्रभावी होती हैं। एक व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत विकसित करना शिक्षकों, विद्यार्थियों और शिक्षाविदों के लिए आवश्यक होता है, क्योंकि यह सीखने और शिक्षण की प्रक्रियाओं को गहराई से समझने और उसे प्रभावी ढंग से लागू करने में मदद करता है।

व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत के प्रमुख घटक (Key Components of Developing a Personal Theory of Learning**)**

1. अधिगम की परिभाषा (Defining Learning): अधिगम (Learning) को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया जा सकता है। यह समझना जरूरी है कि अधिगम सिर्फ जानकारी प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संज्ञानात्मक, भावनात्मक, और सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी है। अधिगम का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि उस ज्ञान को व्यवहार में लाना और समस्याओं को हल करने के लिए नए दृष्टिकोणों का निर्माण करना भी है।

प्रश्न : आपके लिए सीखना क्या है ?क या सीखने का मतलब केवल जानकारी प्राप्त करना है, या उसमें कौशल और दृष्टिकोण का विकास भी शामिल है ?

2. अधिगम के सिद्धांतों की समझ (Understanding Theories of Learning**):** व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत विकसित करने के लिए पहले से मौजूद अधिगम सिद्धांतों (जैसे कि व्यवहारवाद, संज्ञानात्मक सिद्धांत, सामाजिक निर्माणवाद, आदि) की समझ जरूरी है। इन सिद्धांतों का विश्लेषण करके आप यह समझ सकते हैं कि कौन सा दृष्टिकोण आपके लिए सबसे उपयुक्त है।

उदाहरण: व्यवहारवाद (Behaviorism): यह सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि अधिगम व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है, और यह बाहरी प्रोत्साहन (reinforcement) के माध्यम से होता है।

संज्ञानात्मक सिद्धांत (Cognitive Theory**):** यह सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि अधिगम मानसिक प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है, जिसमें सोचने, जानकारी को संसाधित करने, और याद रखने की क्षमता शामिल होती है।

सामाजिक निर्माणवाद (Social Constructivism): वायगोत्स्की द्वारा प्रस्तुत इस सिद्धांत में बताया गया है कि सीखने की प्रक्रिया समाज और संस्कृति के संदर्भ में होती है, और बच्चे संवाद और सहयोग के माध्यम से सीखते हैं।

3. स्वयं का अधिगम अनुभव (Personal Learning Experience): आपका अपना अधिगम अनुभव आपकी सीखने की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित करता है। यह अनुभव विभिन्न संदर्भों, शिक्षकों, स्कूल के वातावरण, और आपकी रुचियों के आधार पर भिन्न हो सकता है। इन अनुभवों का विश्लेषण करना जरूरी है, ताकि आप यह समझ सकें कि आपके लिए कौन सी शिक्षण विधियाँ सबसे प्रभावी रही हैं।

प्रश्न : आपने अब तक कैसे और किस प्रकार से सीखा है?

क्या आप समूह में अधिक सीखते हैं या अकेले काम करने में?

क्या आपके लिए व्यावहारिक अनुभव (प्रैक्टिकल) ज्यादा प्रभावी होते हैं या सैद्धांतिक ज्ञान?

4. मोटिवेशन और अधिगम (Motivation and Learning): अधिगम में प्रेरणा (motivation) की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रेरणा यह तय करती है कि व्यक्ति किसी नई जानकारी या कौशल को सीखने के लिए कितना प्रयास करेगा। एक व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत में यह समझना जरूरी है कि आपकी प्रेरणा के स्रोत क्या हैं ।– आंतरिक प्रेरणा (intrinsic motivation), जैसे कि जिज्ञासा और आत्म–विकास की भावना, या बाहरी प्रेरणा (extrinsic motivation), जैसे पुरस्कार, ग्रेड, या सामाजिक मान्यता।

प्रश्न : आपको सीखने के लिए किस प्रकार की प्रेरणा की आवश्यकता होती है?

क्या आप अधिक प्रेरित होते हैं जब आप किसी व्यक्तिगत रुचि वाले विषय पर काम करते हैं, या जब बाहरी रूप से प्रेरित होते हैं (जैसे ग्रेड)?

5. अधिगम के उद्देश्यों की स्पष्टता (Clarity of Learning Objectives): एक सफल अधिगम सिद्धांत बनाने के लिए यह स्पष्ट होना चाहिए कि सीखने के उद्देश्य क्या हैं। उद्देश्यों की स्पष्टता से यह सुनिश्चित होता है कि आप किस प्रकार के ज्ञान और कौशल को प्राप्त करना चाहते हैं और किस दिशा में काम कर रहे हैं। उद्देश्य संज्ञानात्मक, भावनात्मक, और व्यावहारिक सभी हो सकते हैं।

प्रश्न: आपके अधिगम के उद्देश्य क्या हैं?क्या आप किसी विशेष विषय में गहराई से जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं या नए कौशल विकसित करना चाहते हैं?

6. अधिगम का वातावरण (Learning Environment): आपका अधिगम का वातावरण आपके सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। एक सकारात्मक और सहयोगी वातावरण अधिगम को प्रोत्साहित करता है, जबकि नकारात्मक या अनुचित वातावरण सीखने की गति को कम कर सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि आप एक ऐसा वातावरण चुनें या बनाएं जो आपके सीखने के लिए सबसे अनुकूल हो।

प्रश्न:आप किस प्रकार के वातावरण में सबसे अच्छा सीखते हैं? शांत या संवादात्मक ?क्या आपको शिक्षक से सीधा मार्गदर्शन चाहिए, या आप स्वयं अनुसंधान करना पसंद करते हैं?

7. शिक्षण शैलियाँ और अधिगम (Teaching Styles and Learning): अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। हर शिक्षक की एक अलग शिक्षण शैली होती है। कुछ शिक्षक व्याख्यान (lecture) देना पसंद करते हैं, कुछ संवादात्मक और सहयोगी (interactive and collaborative) शिक्षा पर जोर देते हैं, और कुछ व्यावहारिक अनुभवों (hands-on experience) के माध्यम से सिखाते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि आप समझें कि आपकी अधिगम शैली के साथ कौन सी शिक्षण शैली सबसे अधिक मेल खाती है।

प्रश्न:किस प्रकार की शिक्षण शैली आपको सबसे अच्छी तरह से सीखने में मदद करती है?क्या आपको शिक्षक द्वारा मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, या आप अधिक स्वतंत्र रूप से काम करना पसंद करते हैं?

8. समकालीन तकनीक का उपयोग (Use of Modern Technologies): आजकल, प्रौद्योगिकी (ींशलहपेश्रेसू) अधिगम के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऑनलाइन पाठ्यक्रम, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, मोबाइल एप्स, और डिजिटल उपकरण सीखने की प्रक्रिया को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाते हैं। अपने व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत में यह देखना महत्वपूर्ण है कि आप प्रौद्योगिकी का कैसे उपयोग कर सकते हैं।

प्रश्न: क्या आप ऑनलाइन सीखने के तरीकों का उपयोग करते हैं?

क्या डिजिटल उपकरण आपकी सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं?

व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत का विकास (Steps to Develop a Personal Learning Theory)

1. स्वयं के अधिगम अनुभव का विश्लेषण करें: अपने पिछले सीखने के अनुभवों को देखें और यह समझने की कोशिश करें कि आपने किन परिस्थितियों में सबसे अधिक प्रभावी रूप से सीखा।

2. **अधिगम के सिद्धांतों का अध्ययन करें:** विभिन्न अधिगम सिद्धांतों (जैसे कि व्यवहारवाद, संज्ञानात्मक सिद्धांत, सामाजिक निर्माणवाद) का अध्ययन करें और उनमें से उन सिद्धांतों को चुनें जो आपके सीखने की शैली के साथ सबसे अधिक मेल खाते हैं।

3. **स्वयं की सीखने की शैली को समझें:** यह पहचानें कि आप कैसे सबसे अच्छा सीखते हैं – व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से, किताबों से, या समूह में काम करने के दौरान।

4. **प्रेरणा के स्रोतों की पहचान करें:** यह समझें कि आपको सीखने के लिए प्रेरित करने वाले मुख्य कारक क्या हैं और कैसे आप उन कारकों का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं।

5. **शिक्षण और सीखने के उद्देश्यों को स्पष्ट करें:** अपने अधिगम के उद्देश्य स्पष्ट करें ताकि आप अपने प्रयासों को सही दिशा में केंद्रित कर सकें।

6. **संसाधनों और तकनीकों का उपयोग करें:** यह तय करें कि आप किन संसाधनों और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करेंगे ताकि आपका सीखना अधिक सुलभ और प्रभावी हो।

निष्कर्ष (Conclusion) व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत का विकास आपको यह समझने में मदद करता है कि आप किस प्रकार से सबसे प्रभावी रूप से सीख सकते हैं। यह प्रक्रिया स्वयं के अधिगम अनुभवों, सिद्धांतों, प्रेरणा, और उद्देश्यों की स्पष्टता पर आधारित होती है। एक बार जब आप अपने व्यक्तिगत अधिगम सिद्धांत को समझ लेते हैं, तो आप अपने शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रासंगिक और प्रभावीबनासकतेहैं।

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर
Institute of Advanced Studies in Education
Bilaspur (C.G.)